काईपाड़ा गाँव की कहानी

एक साथ काम करने के परिणामों को सामने से देखना, मछलीपालन के लिए स्वयं सहायक समूह द्वारा फेडरेशन तैयार करना एवं पश्चिम बंगाल के गाँव में एक मत्स्य सेवा केन्द्र की स्थापना

लेखक- ग्राह्म हेलर, सत्येन्द्र डी. त्रिपाठी, विलियम सेवेज, कुद्दुस अन्सारी, गौतम दत्ता एवं एस.एल.यादव

अभाव में रहने वाले मेहनती व्यक्ति अपना भविष्य सुरक्षित करने के प्रयास में हैं

विश्व के सर्वाधिक अनुसूचित जाति एवं जनजाति भारत में पाए जाते हैं। कभी-कभी इन लोगों को आदिवासी भी कहा जाता है (बंजारा एवं आस्ट्रेलिया के एर्वोजिनाल लोगों जैसा)। अनुसूचित जाति (प्रशासनीय काम काज में) एवं दूसरे वर्ग को पिछड़ा वर्ग कहा जाता है। काफी अरसे के बाद इन जनजातियों यानि पिछड़े वर्गों की जीविका के उन्नति के उपायों पर ध्यान दिया जा रहा है। उनके विकास और उन्नति के लिए कुछ न कुछ योजनाएँ बनाई जा रही है। काफी लोगों का यह सोचना है कि इन सब योजनाओं का प्रभाव सीमित है, फिर भी बंगाल के एक गाँव में अपने कर्म क्षमता से परिवर्तन लाने का एक उदाहरण आप देख सकते हैं जिसमें अभाव में रहने वाले कुछ मेहनती लोग अपने भविष्य को सुरक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। कुछ सीमित जमीन और कटते हुए वन संपदा के कारण अब कई लोग मौसमी तालाब के व्यवहार की ओर रूख कर रहे हैं जिसके चलते लोगों को दैनिक मजदूरी के लिए गाँव छोड़ कर जाना नहीं पड़ता। मछुआरों एवं मत्स्य किसानों ने एक जुट होकर अपने पुराने सीमित तजुर्बे को लेकर एक फेडरेशन तैयार किया, अपनी कार्यकुशलता से उनहोंने अपने जरूरत के सामानों को जुटाया, इसके अलावा नीति परिवर्तन में भी उनका एक मुख्य भूमिका रहा एवं उनके जीविका पर भी इसका प्रभाव पड़ा।

काईपाड़ा गाँव की एक सच्ची कहानी

काईपाड़ा पश्चिम बंगाल के पुरूलिया जिले के बड़ा बाजार ब्लाक का एक गाँव है, यह पुरूलिया से लगभग ३४ किमी. दक्षिण एवं बड़ा बाजार से २४ किमी. उत्तरपूर्व में स्थित है एवं बड़ा बाजार पुरूलिया बड़ी सड़क से लगभग १५ किमी. दूरी पर स्थित है।

पश्चिम बंगाल के काईपाड़ा गाँव का एक दृश्य

२०० घरों वाला काईपाड़ा गाँव में लगभग ८० परिवार है तथा यहाँ की कुल जनसंख्या लगभग १२०० है, जिनमें खामारटाड़ एवं गान साईपुया टोला में महतो[१] उराँव, रविदास, सहिस एवं कालिन्दी परिवार का आवास है। अक्टूबर के अन्त में जब हम उस गाँव में गए तो बारिस के बाद रास्ते में किचड़ के साथ-साथ मौसमी तालाब को भी पानी से भरा हुआ पाया।

[१] महतो को भारत में पिछड़ा वर्ग क दर्जा दिया गया है।

खराब स्वास्थ्य, सीमित शिक्षा एवं सीमित अवसर

काईपाड़ा गाँव के लोगों में शिक्षा का स्तर काफी कम है। वर्तमान ५० प्रतिशत से अधिक पुरूष पढ़े-लिखे हैं (पहले जो सिर्फ ४० प्रतिशत था) लेकिन महिलाओं के क्षेत्र में शिक्षा का स्तर अभी भी एक तिहाई से कम है (पहले जो १२ प्रतिशत था)। यहाँ के लोग हमेशा से ही कुछ न कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से जुझते थे, जैसे- कुपोषण, डायरिया, चर्मरोग, मलेरिया एवं खून की कमी (ज्यादातर महिलाओं में) आदि। कई वर्षों से जो परिवार अपने पर्याप्त खाद्य सामाग्री उत्पादन नहीं कर पाते थे (७५ प्रतिशत किसान) उनके पास दो ही उपाय थे पहला सब तरफ से निराश होकर ५० प्रतिशत ब्याज दर पर दो से छः महीने तक के लिए स्थानीय साहुकार से चावल उधार लेना अथवा मजदूरी के लिए गाँव छोड़कर बाहर चला जाना। पूर्वी भारत में मजदूरी का सही वेतन नहीं मिलने की घटनाएँ आम है।

समस्याओं के समाधान के लिए एकजुट होना

जाबरा गाँव की तरह ही काईपाड़ा के लिए भी १९९० में हिन्दुस्तान फर्टिलाइजर कॉरपोरेशन द्वारा एक परियोजना पेश किया गया था, उसके बाद कृभको तथा डी.एफ.आई.डी. के साथ मिलकर गाँव के लोगों को एकजुट करके इण्डिया रेनफेड फार्मिंग परियोजना के जरिये काम करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस प्रक्रिया को ''सामाजिक सम्पदा का एकजुट करना'' कहा जाता है जिसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति को काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, लोगों के मन में जागरूकता पैदा की जाती है, एकजुट होकर काम किया जाता है एवं उसके द्वारा विभिन्न समस्याओं का समाधान निकाला जाता है। इस महान कार्य में श्री. एस.के. महापात्र एवं श्री. गौतम दत्ता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

श्री. एस.एल यादव एवं गौतम दत्ता काईपाड़ा गाँव के एक समूह के साथ चर्चा करते हुए जिनके साथ वे कई वर्षों से काम कर रहें हैं

समस्याओं का सामाधान करने की आवश्यकता है

जैसा कि शिक्षा एवं स्वास्थ्य की सीमा सीमित है, इसलिए कुछ समस्याओं का सामाधान करने के लिए जीविका निर्वाहन में स्थानीय प्राकृतिक-संपदा का व्यवहार करना जरूरी है। काईपाड़ा में १५० हेक्टर कृषि योग्य भूमि है एवं आस-पास कोई वन संपदा नहीं है। फसल में बीमारी, कीड़ा का प्रभाव हमेशा लगा रहता है एवं कभी-कभी यह भारी क्षति का कारण बन जाता है, जैसे लगातार दो सालों तक बैंगन एवं टमाटर की खेती में वायरल रोगों के प्रकोप से क्षति के कारण अब कोई इसकी खेती करना नहीं चाहता। धान की पत्ती में आने वाली बीमारी एक बड़ी समस्या है और धान के तने में छिद्र और चने के झाड़ के तने में छिद्र भी इस प्रान्त में ज्यादा देखा जाता है।

काईपाड़ा गाँव में पाए जाने वाली पालतू पशु भारतीय नस्ल की है। इसके देख-भाल के लिये बहुत ही कम पैसा खर्च किया जाता है। पशुओं का सालभर का खाद्य सामग्री का जुगाड़ साल में एक ही बार में कर लिया जाता है। वर्षा के

दिनों में ज्यादातर पशु- स्वास्थ्य को लेकर समस्याएँ बनी रहती है जबकि रोग और मृत्यु सालभर लगा रहता है जो कि महामारी के समय और भी बढ़ जाती है। ग्रामवासियों में स्थानीय एवं राज्य

स्तरीय पशु-चिकित्सालय की व्यवस्था सीमित है। पशुधन पर निवेश एक प्रमुख निवेश है इसलिए इसका नुकसान पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

सालाना इस प्रांत में १२०० मिमी. वर्षा होती है (जुन-सितम्बर) जबकि हर साल इस में अंतर देखा गया है। चार साल के अन्तराल पर यहाँ के लोगों को सूखे का सामना करना पड़ता है। वर्ष १९८८ एवं १९९३ में कुछ समस्याएँ हुई थी जब टाँड़ पर ज्यादातर फसलों का नुकसान हुआ था।

पश्चिम बंगाल के काईपाड़ा गाँव का एक दृश्य

संपदाओं का बहुरूपी प्रयोग एवं बदलाव की एक कोशिश

काईपाड़ा गाँव में उद्योग एवं लोगों की जागरूकता का बहुआयामी प्रयोग होता है, जैसे कि पशुधन एवं तालाब, गाय, भैंस का इस्तेमाल भी खेती में किया जाता है, गोबर से खाद तैयार होता है, इससे दूध भी मिलता है और जरूरत के समय पर लोग इसे बेचकर पैसा प्राप्त करते हैं, बकरी के मांस का भी सेवन किया जाता है लेकिन मुर्गी का मांस अधिक लोकप्रिय है।

पानी के जमाव को रोके रखने के लिए छोटे-छोटे ३६ तालाब है, ऐसे तालाबों में जहाँ एक ओर पानी रोक कर मछली पालन किया जाता है वहीं दूसरी ओर इस पानी का अन्य प्रयोग भी किया जाता है, जैसे खेत की सिंचाई करना, नहाना, मवेशियों के लिए इस्तेमाल करना आदि।

जहाँ भिन्न-भिन्न समस्याएँ एक दूसरे से जुड़ी हुई है वहाँ किसी एक समस्या का सामाधान ढूंढना एक मुश्किल काम है। कुछ खेती काफी लाभदायक होते है जैसे काला चना, गेहूँ, आदि लेकिन रोजगार का सबसे लाभदायक जरिया मछली पालन है , जिसके द्वारा स्वयं-सहायताकारी समूह को काफी फायदा होता है। यद्यपि यह सभी तालाब मौसमी है लेकिन काईपाड़ा गाँव के मेहनती लोगों की कोशिशों एवं इस संपदा के सही प्रयोग द्वारा मछली पालन एक लाभदायक व्यापार तथा सही पोषण के रूप में उभर कर सामने आया है।

मछली पालन एक लोकप्रिय जीविका निर्वाहन का विकल्प क्यों है?

हम सभी अपने जीवन के सिद्धांतों को स्वयं बनाते है जो हमारे परिवेश से प्रभावित होता है एवं सबका पसन्द तथा कारण एक दूसर से भिन्न होता है। पश्चिम बंगाल एवं उसके आस-पास के राज्यों में मछली पालन एक लोकप्रिय जीविका निर्वाहन का विकल्प है, साधारणतः इसके तीन कारण है- पहला, जो खाद्य उत्पादक है उनके पास इसे खरीदने वालों के मुकाबले भण्डार ज्यादा रहता है। काईपाड़ा में हर एक व्यक्ति उस कष्टदायक घटना से वाकिफ है जब खाद्य सामाग्री जुटाने के लिए उन्हे स्थानीय साहुकार की मदद या गाँव के बाहर जाकर मजदूरी करना पड़ता था।

अतः यह कोई आश्चर्य का विषय नहीं है कि खाद्य सामग्री का उत्पादन करना जीविका निर्वाहन का एक महत्वपूर्ण अंग है। कुछ वरिष्ठ लोगों की याद अभी भी ताजा है, यह बात आजादी से कुछ दिन पहले की है जब बंगाल में भूखमरी फैली थी, यह हर कोई जानता है कि उस समय कई लाख लोग मौत के शिकार हुए थे और यह भी हर कोई मानता है उनम ं से ज्यादातर गरीब तबके के लोग थे। कुछ लोग जो खाद्य सामग्री जुटा पाए थे वे श्रमिक वर्ग के थे। खाद्य भण्डार को संग्रह करना ही खाद्य उत्पादन का प्रमुख उद्देश्य है और यह दोनों कार्य ही जीविका निर्वाहन तथा जीवन रक्षण का जरिया है।

काईपाड़ा गाँव के नर्सरी तालाब में जाल फेंकते हुए

दूसरा कारण, छोटे स्तर पर मछली पालन हमेशा सफल होता है। डी.एफ.आई.डी. के एन.आर.एस.पी[२] द्वारा छोटे स्तर पर मछली पालन के लिए पश्चिम बंगाल के काईपाड़ा गाँव के विभिन्न स्वयं सहायतकारी दल को सहायता दी जाती है जिसमें महिला स्वयं सहायक दल भी शामिल है जैसे वामु महिला समिति, खड़ाभाड़टाड़ महिला समिति एवं पुरूष वर्ग में खड़ामाडटाड़ नवतरूण संघ एवं काईपाड़ा नवयुवा संघ है। अपने काम के परिणामों को देखकर कृषक दल एवं वैज्ञानिक दोनों ही खुश है। मौसमी तालाब में मछली पालन की सफलता की कहानी चाय की दूकान से लेकर कृषकों के सभाओं के जरिये दूर-दूर तक फैल गई है तथा इस शोध कार्य के प्रकाशन से शिक्षा जगत में भी यह बात फैल गई है कि गरीबों के जीविका की उन्नति में मौसमी तालाब में की जाने वाली मछली पालन भी एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। यह एक ऐसा विषय था जिसमें मत्स्य विभाग ने पहले कभी अपनी दृष्टि नहीं डाली थी और इस पर कोई सरकारी नीति भी नहीं बनाई गई थी।

तीसरा मुख्य कारण मछली का लोकप्रिय एवं प्रधान खाद्य सामग्री होना है। बंगाली लोग मछली खाना अधिक पसंद करते हैं एवं पूर्वी भारत के आदिवासियों के रोज के भोजन में मछली या मांस की प्रधानता रहती है। मछली पालन सिर्फ एक जीविका निर्वाहन का उपाय नहीं है बल्कि यह खाने में प्रोटीन की मात्रा की पूर्ति भी करती है। मछली का तेल एवं विटामिन काफी उपकारी होता है, मछली के प्रोटीन में लाईसिन होती है जो हमारे आहार का आवश्यक तत्व है। यह दूसरे शाकाहारी खाद्य जैसे चावल, दाल में कम मात्रा में पाया जाता है, यही कारण है कि बहुतायत बंगाली लोगों की सांस्कृतिक खाद्य मछली और चावल है।

मछली पालन करने के इच्छुक किसानों को चाहिए कुछ सहयोगी सेवा

यद्यपि मछली एक लोकप्रिय एवं पौष्टिक जीविका निर्वाहन का उपाय है एवं इसमें सफलता की संभावना अधिक होने के साथ ही साथ यह खाद्य भण्डार संग्रह करने का भी काम करती है। फिर भी मछली पालन के प्रयोग के लिये जल संपदा को व्यवहार करने में कुछ तत्वों का प्रभाव रहता है। इसमें कई अंशधारकों का अंशग्रहण रहता है। एक तालाब का निश्चित रूप से कोई न कोई मालिक होता है (जिसमें सरकार, समुदाय, इच्छुक समूह एवं व्यक्ति विशेष आता है), पानी का व्यवहार तालाब के मालिक के अलावा भी गाँव के सभी लोग करते हैं। तालाब के पानी के व्यवहार की स्वतंत्रता तथा उसे भाड़े में देने को लेकर विवाद मछली पालन के लिए नुकसानदायक होता है, इस तरह का विवाद काफी लम्बे अरसे

[२]अनुसंधान परियोजना आर.६७५९ के पूर्वी पठारी क्षेत्र में कृषि कार्य के साथ मछली पालन का सम्मेलन

काईपाड़ा गाँव के अंशीदारों का एक नर्सरी तालाब

तक चलता है।जो मत्स्य कृषक मछली पालन करना चाहते हैं उनको कई प्रकार के सहयोग की आवश्यकता होती है जैसे- किस प्रकार बेहतर तरीके से मछली पालन किया जाए, मछली पालन की शुरूआत करने के समय श्रम एवं सामग्री, इसके लिए पैसा एवं जब कोई काम करने में कठिनाई हो रही हो तो उस विषय में जानकारी या सहायता। कई जिलों में जानकार इन कामों में मदद करते हैं, इसके अलावा जिला मत्स्य अधिकारी, ग्रामीण बैंक के प्रबंधक और दोस्त एवं परिवार वर्ग इस काम में सहायता करते हैं। यह सच है कि बहुत सारे छोटे-छोटे मौसमी तालाब है और काफी लोग पिछड़े वर्ग के है लेकिन उन तक मदद पहुँचाने वाले लोगों की कमी है।

एक प्रभावी परिवर्तन के लिए स्वयं-सहायक दलों के फेडरेशन का गठन

काईपाड़ा गाँव की विशेष खबर, यहाँ के स्वयं सहायक दलों ने मिलकर एक फेडरेशन तैयार किया जो कि सभी के विकास में सहायक है, यही है इस कहानी का मूल तत्व।

कुद्दुस अन्सारी अपने परिवार के साथ काईपाड़ा गाँव के समीप, खमार टाँड़ गाँव में रहते है। वे खवासडीह नव दीप्ति संध नामक स्वयं सहायक दल के जानकार है। उन्होने यह तय किया गया कि उन्हे मौसमी तालाब में मछली पालन करना है, इसके लिए उन्होने मछली पालन करने के तरीकों के बारे में जाना एवं सबको लेकर मछली पालन के काम में जुट गए, इस काम में उन्होंने काफी सफलता भी हासिल किया। कुद्दुस एक मेहनती जानकार है और सबको एक साथ लेकर काम करने में वह माहिर है। जब जीविरी ने अपने कार्य क्षेत्र का विस्तार किया तब दूसरे लोगों को मछली पालन जीविका में प्रोत्साहित करने के लिए कुद्दुस को ''एक्सटेन्शन जारकार'' की हैसीयत से ले जाया गया। कुद्दुस ने गाँव-गाँव घुमकर यह समझाया कि एकजुट होकर काम करने से अधिक लाभ मिलता है। अगर सब स्वयं सहायक दल एक साथ मिलकर काम करे तो

श्री. कुद्दुस अन्सारी झारखण्ड राज्य में एक कार्यशाला को संबोधित करते हुए

काम करने में आसानी होगी। कुद्दुस ने स्वयं सहायक दलों को एकजुट करके फेडरेशन बनाकर अपना सपना सफल किया।

२००४ के जनवरी में काफी बातचीत के बाद ७० स्वयं सहायक दलों को मिलाकर एक फेडरेशन तैयार किया गया जिसमें १७४ पुरूष एवं ८९० महिलाएँ हैं, इसमें से १४ स्वयं सहायक दलों के लोगों का जीवन स्तर गरीबी रेखा के नीचे है। दल चलाने के लिए फेडरेशन के जेनरल बॉडी में ४० सदस्य एवं ११ लोग निर्वाचित सदस्य हैं। फरवरी २००० में बाजरा क्लस्टर में किसान मेले में फेडरेशन के २००० सदस्यों ने भाग लिया एवं वहाँ उद्‌बोधन संगीत भी गाया गया।

नीति परिवर्तन में किसानों को अपनी बात रखने का मौका देना

स्ट्रीम द्वारा भारत में चलाए जा रहे परियोजना में ''नीति परिवर्तन में किसानों को अपनी बात रखने पर'' जोर दिया जा रहा है। इस विषय में कुद्दुस अन्सारी ने २००४ में स्ट्रीम द्वारा आयोजित डी.एफ.डी, एन आर.एस.पी. के कार्यशाला में, जो मत्स्य सेवा केन्द्र तैयार करने का पहला कदम था, अपना वक्तव्य पेश किया था।

इस कार्यशाल में जाने से पहले काईपाड़ा गाँव के किसानों ने एक सभा में मिलकर यह तय किया फेडरेशन की तरफ से कुद्दुस अन्सारी किस विषय पर बोलेंगे। इसके बाद इसी सभा में किसानों ने इस बात पर अपनी सहमती जताई कि फेडरेशन ही एक ऐसी संस्था है जो इस तरह की सेवाओं जैसे कार्यक्रमों का संचालन कर सकेगी।

फेडरेशन के जेनरल बाडी के बैठक का एक दृश्य

कुद्दुस अन्सारी ने इस कार्यशाल में फेडरेशन की तरफ से मत्स्य सेवा केन्द्र खोलने का प्रस्ताव रखा, दूसरे जगहों से भी मत्स्य सेवा केन्द्र खोलने का प्रस्ताव प्राप्त हुआ जैसे झारखण्ड मत्स्य विभाग, रांची; केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर और पश्चिमी उड़ीसा के कुछ जिलों से। इस कार्यशाल के बाद स्ट्रीम के दो सदस्य और जी.वी.टी. के एक सहकर्मी ने मिलकर चार दिनों तक काईपाड़ा गाँव में घुमकर यहाँ के फेडरेशन, स्थानीय बैंक, सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों के अधिकारियों से मिलकर बहुत से विषयों पर बातचीत की। स्ट्रीम और एन.आर.एस.पी ने मिलकर काईपाड़ा गाँव में फेडरेशन की सभा आयोजित करने का निश्चय किया जिसमें फेडरेशन, बैंक एवं दूसरे संस्थानों के बीच प्रगाढ़ संबंध स्थापित किया जा सके। इस कार्यशाला में कुद्दुस ने अपने बातों से यह समझाने में सफल रहा कि किस प्रकार मत्स्य सेवा केन्द्र मछुआरों तथा मत्स्य किसानों के लिए लाभदायक है। मत्स्य किसान भी यह समझ पाए कि किस तरह कम भाग-दौड़ से मछली पालन तथा सरकारी नीति एवं लघु ऋण के बारे में अधिक से अधिक जानकारी मिल सके, साथ ही साथ सहयोगी संस्था भी यह समझ सके कि किस प्रकार वे अपने प्रयासों को और कारगर ढँग से चलाये ताकि उनको भविष्य में भी अन्य सहयोग मिलता रहे। ठीक एक महीने बाद फेडरेशन की कार्यकारिणी समिति द्वारा एक प्रस्ताव पास किया गया जिसके अंतर्गत काईपाड़ा में एक मत्स्य सेवा केन्द्र खोला गया।

पूँजी लागत एवं टिकाऊ सेवा

प्रत्येक स्वयं सहायक दलों ने दो हजार रूपये (लगभग २७ अमरीकी डालर) की पूँजी का योगदान दिया जिससे कार्य प्रारंभ किया गया। मत्स्य जीरा प्रदान करना काईपाड़ा मत्स्य सेवा केन्द्र के अनेक सेवाओं में से एक सेवा है। किसानों या मत्स्य पालकों जिनके पास मौसमी तालाब है उन्हे तालाब सूखने से पहले फसल तैयार करने के लिए मत्स्य जीरा (जैसे मछली का थोड़ा बड़ा आकार का बच्चा) की आवश्यकता होती है (साथ ही साथ जितना संभव हो वर्षा ऋतु में बढ़ी हुई

मछलियों की आपूर्ति करने संबंधी प्राथमिकता को भी किसानों द्वारा अनुमोदित किया गया है जिसे एन.आर.एस.पी स्ट्रीम के विचारों एवं आपसी एकमत गठन की प्रक्रिया में इसे मजबूती से उठाया गया है)।

सन् २००४ तक ''मछली जीरा'' के पालन हेतु दो तालाबों को फेडरेशन द्वारा एक निश्चित अवधि तक के लिये पट्टे पर लिया गया। तीन किलोमीटर के दायरे में अब तक २५,००० मछली के जीरों की बिक्री की गयी, फेडरेशन के सदस्यों को मत्स्य जीरा दर में छूट भी दी गई। परिणामतः आज की तारीख में २४ किलोमीटर की दूरी से भी मछली जीरा खरीदने हेतु किसान आ रहे हैं परन्तु फेडरेशन अपनी आपूर्ति क्षमता के बारे में काफी सचेत है। श्री. कुद्दुस अन्सारी के अनुसार ''मुख्य रूप से गुणवत्ता में ध्यान देना चाहिए''। फेडरेशन का यह अनुमान है कि स्थानीय बाजार में मत्स्य जीरा की मांग दस लाख के लगभग है, अब यह इन सब लोगों का मुख्य उद्देश्य है कि कम से कम इस मांग की आधी आपूर्ति मत्स्य सेवा केन्द्र द्वारा की जा सके।

काईपाड़ा मत्स्य सेवा केन्द्र का एक दृश्य

दूसरी ओर स्थापित मत्स्य स्वयं सहायक समूह एवं मत्स्य पालन केन्द्र की सेवाओं को और स्थायी बनाने के लिए सालगाटी ग्राम के आस-पास के गाँव में ६ महिला समूह को सहायता दी जा रही है ताकि लगभग १० तालाबों में बिक्री हेतु बड़ी मछली की पैदावार की जा सके और साथ ही साथ ऐसी व्यवस्था करने का प्रयास भी किया जा रहा है जिससे ५० प्रतिशत आमदनी सीधे समूह को जाय, २५ प्रतिशत की आमदनी तालाब मालिकों को मिले तथा २५ प्रतिशत की आमदनी मछली जीरा की आपूर्ति के बदले मत्स्य पालन केन्द्र को मिले।

सूचना एकत्र करने का नया मार्ग

अक्टूबर २००४ में काईपाड़ा ग्राम में स्ट्रीम पदाधिकारी एवं ग्रामीण विकास ट्रस्ट के पदाधिकारियों द्वारा दौरा किया गया जिसके दरम्यान फेडरेशन ने मासिक सभा को सम्बोधित करते हुए प्रशंसा के साथ-साथ सहायता देने के प्रति अपना विचार व्यक्त किया। स्ट्रीम द्वारा उठाये गए प्रारंभिक कदमों में मत्स्य सेवा केन्द्र के सूचना सेवाओं को और विकसित एवं प्रचारित करने के लिए स्थानीय भाषाओं में चलचित्र, नुक्कड़ नाटक, स्ट्रीम द्वारा विकसित पत्रिका एवं भारत तथा अन्य जगहों के शोधकर्ताओं द्वारा विकसित किये गए दस्तावेज आदि शामिल है, जो सूचना संसाधनों का भंडार है।

स्ट्रीम इनीशियेटीव एवं डी.एफ.आई.डी.-एन.आर.एस.पी. की पहल एवं सरकारी सहायता से कृषकों के मांग के अनुसार मत्स्य सेवा केन्द्र सेवा की एक नयी दिशा है, जैसे एक काईपाड़ा में दूसरा झारखण्ड में तथा उड़ीसा में प्रस्तावित मत्स्य सेवा केन्द्र।

स्वयं सहायक दल के फेडरेशन तथा उनके मत्स्य सेवा केन्द्र सूचना संग्रह एवं इसे प्रचार करने का एक नया मार्ग है जहाँ कृषक दलबद्ध होते है, विभिन्न संप्रेषण एवं स्थानीय सेवाओं में उन्नती हो रहा है जो अन्य लोगों के काम में भी आ रहा है। यही लोग चाहते थे, सरकार की प्रमुख प्रयास, कृषक एवं मत्स्य कृषकों के उद्योग, सूचना संग्रह एवं प्रचार के लिए एक नया मार्ग जो अब वास्तविक रूप से हो रहा है। श्री कुद्दुस के अनुसार ''पहले कोई नहीं आता था लेकिन अब हर कोई आ रहा हैं''।

सामाजिक पूँजी संबंधी विशेष जानकारी हेतु कृपया संपर्क करें:- श्री अमर प्रसाद, मुख्य कार्यकारी पदाधिकारी, ग्रामीण विकास ट्रस्ट, नोएडा, श्री. जे.एस. गंगवार, उप मुख्य कार्यकारी पदाधिकारी ग्रामीण विकास ट्रस्ट, नोएडा या श्री. वीरेन्द्र कुमार विज, परियोजना प्रबंधक ग्रामीण विकास ट्रस्ट रांची, झारखण्ड।

सहयोगी मत्स्य शोध जिसे काईपाड़ा में किया गया है इसकी विशेष जानकारी हेतु संपर्क कर सकते हैंः- एन.आर.एस.पी/डी.एफ.आई.डी. और इसके अलावा आप पढ़ सकते हैं ''पूर्व भारत में मौसमी तालाबों में मछली पालन'' पर लिखा गया लेख जो एशियन फिशरिज़ साईंस में प्रकाशित किया गया था और जिसके लेखक हैंः- मैलनी फेलसिंग, श्री. ग्राह्म हेलर, गौतम दत्ता, ब्रजेन्दु कुमार, श्रीमती स्मीता श्वेता, श्री. ए. नटराजन, श्री. गुलशन कुमार अरोरा और श्री. बीरेन्द्र सिंह (पूर्व परियोजना प्रबंधक, जी.वी.टी.) एवं चलचित्र ''छोटी मछलियों का तालाब' उपर्युक्त दोनों को निम्नलिखित पते पर डाऊनलोड किया जा सकता है : www.streaminitiative.org.

मत्स्य सेवा सूचना केन्द्र से संबंधित विशेष जानकारी हेतु कृपया संपर्क करेंः- श्री. रूबु मुखर्जी, स्ट्रीम संचार केन्द्र, ई-मेलः streamin@sancharnet.in

काईपाड़ा में मत्स्य सेवा केन्द्र की स्थापना में योगदान दे रहे हैंः- श्रीमती अलोका महतो, गोसाईडिही मध्यपारा ग्राम उन्नायन महिला समिति; श्रीमती पुर्निमा सारंगी, भेगारी महिला समिति; श्रीमती उर्मिला टुडु, सालगाटी विधु चन्दन महिला समिति; श्रीमती अल्पना महतो, भगिनी नीवेदिता महिला समिति; श्रीमती उर्मिला टुडु, सिद्धू कान्हू महिला समिति; श्री सत्य महतो, रघुनाथपुर महिला समिति; श्रीमती जिलापी कालिन्दी, काईपाड़ा महिला समिति; श्री निधिराम महतो, काईपाड़ा किशोर संघ; श्रीमती आरती महतो, भवानीपुर महिला समिति; श्रीमती पुष्पा महतो, वामू महिला समिति; श्री मनोरंजन महतो, गोसाईपुवा मिलन संघ; श्रीमती ममता महतो, गोसाईपुवा महिला समिति; श्री कुद्दुस अन्सारी, खोआरडी नव दिप्ती संघ; श्रीमती बेला महतो, सुकरहुटु मातारा महिला समिति; श्रीमती हिमानी महतो, सुकरहुटु मातरा महिला संघ; श्री चक्रधर महतो, खामारटाड़ नव तरूण संघ; श्रीमती मानवाला महतो, खामाड़टाड़ महिला समिति; श्री सुरमाली अन्सारी, पलमा सबुज संघ और श्रीमती निर्मला मुर्मु, सालगाटी महिला समिति।